Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVII, Jan-2015, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

REVIEW ARTICLE

कृषि में आधुनिकीकरण की चुनौतियां और विकल्प जैविक कृषि के विशेष संदर्भ में

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVII, January-2015, ISSN 2230-7540

कृषि में आधुनिकीकरण की चुनौतियां और विकल्प जैविक कृषि के विशेष संदर्भ में

B. R. Baraskar

Assistant Professor, Economics, Govt. College, Multai

---------------------------------X---------------------------------

कृषि में आधुनिकीकरण से आशय–

खेती के कार्य में पारंपरिक कृषि आदानो यथा मानव श्रम, बैलश्रम, घरेलू बीज, हल और पारंपरिक कृषि औजारो के स्थान पर उन्नत बीज रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, आधुनिक कृषि यंत्र, ट्रैक्टर, पम्पसेट आदि के उपयोग को बढावा देना है।

ग्रामीण भारत में कृषि और उससे जुडी सहायक गतिविधियॉं गांव के अधिकांश लोगो की आजीविका का मुख्य साधन होते है। कम्प्युटर क्रांति के इस वैज्ञानिक युग में नित्य नवीन अविष्कार हो रहे है आधुनिकीकरण के इस दौर में कृषक कृषि तथा उससे संबंद्ध सभी गतिविधियां भी इस आधुनिकता से प्रभावित हो रही है । कृषि क्षेत्र में हो रहे इस बदलाव से कृषको को भी आगाह रहने की आवश्यकता है।

भारतीय कृषि इतिहास को देखे तो हम पाते है कि जिस देश का किसान सदियो से प्राकृतिक खेती करता आया है। वह किसान इस वैज्ञानिक युग में अब पारंपरिक कृषि तकनीक के स्थान पर अत्याधुनिक नवीन कृषि पद्धतियो को कृषि कार्य में तेजी से अपनाता जा रहा है। अतः अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रो की भांति कृषि क्षेंत्र भी आधुनिकीकरण के प्रभाव से अछूता नहीं रह सका। हरित क्रांति के आगमन के पश्चात किसानो द्वारा अपनायी जाने वाली कृषि पद्धतियो में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। इसी का परिणाम है कि हमारा देश जो स्वंत्रता से पूर्व भयंकर खाद्यान्न संकट से जूझ रहा था वह आज खाद्यान्न के मामले आत्म निर्भर हो गया है किन्तु इसे ही उपलब्धि मान कर बैठ जाना उचित न होगा। कृषि में इस आधुनिकीकरण ने अनेक समस्याए बडी चुनौतियो के रूप में हमारे सामने खडी कर दी है। जिन पर गंभीरतापूर्वक विचार करना आवश्यक है।

भारत जैसे विकासशील देश में आज भी कृषि को अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है क्योकि कृषि एवं संबंध क्षेत्र में न केवल बहुसंख्यक लोगो को रोजगार मिला हुआ है बल्कि देश के अधिकांश उद्योग धंधे भी कृषि पर ही आश्रित है। हमारे देश की लगभग 71 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है तथा अर्थव्यवस्था का बडा हिस्सा भी ग्रामीण ही है। बहुसंख्यंक लोगो की रोजी रोटी का माध्यम भी कृषि है। इन स्थितियो में यदि कृषि पिछड़ती है तो देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था इससे प्रभावित होती है। यह कहा जाता है कि यदि कृषि को छींक भी आती है तो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को जुकाम हो जाता है। हमारी कृषि प्रधान अर्थव्यवसथा के संदर्भ में बिल्कुल सत्य प्रतीत होती है। अर्थव्यवस्था में कृषि महती भूमिका है, क्योकि कृषि हमारे देश के लोगो की जीवन शैली से जुडी है और मानव जीवन में रची बसी है।

आदिकाल सें वर्तमान तक इस परिवर्तनशील युग में कृषि कियाकलापो और कृषि पद्धतियो में भी समयानुकूल परिवर्तन होते रहे है। आदिकाल में प्राकृतिक खेती की जाती थी। खेती में मानवश्रम के साथ हल बैल और पारंपरिक कृषि औजारो का उपयोग किया जाता था, किन्तु आज तो टैक्टर तथा नये नये अत्याधुनिक कृषि यंत्रो की सहायता से खेती की जा रही है। कृषि में इस आधुनिकीकरण ने न केवल कृषि क्षेत्र का बल्कि संपूर्ण अर्थव्यवस्था का परिदृश्य ही बदलकर रख दिया है। इस वैज्ञानिक युग में नित्य नवीन खोजे और अविष्कार हो रहे है। जिसने सारी दुनिया ही बदल डाली है। गांवो में टी वी मोबाईल यातायात के आधुनिक साधन सूचना प्रौद्योगिकी के बढते चलन ने ग्रामीण परिदृश्य में कल्पनातीत परिवर्तन लाया है। इस आधुनिकता के प्रभाव से ग्रामीणो की जीवन शौली से लेकर कृषि के कियाकलाप तक बदल गये है। अतः निसंदेह है कि आधुनिकता के प्रभाव से कृषि क्षेत्र प्रभावित हुआ है। एक विकासशील देश की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि ही है क्योकि औद्योगीकरण मूलरूप में कृषि विकास की ही देन होता है। इंग्लैण्ड जर्मनी जापान आदि देशो में औद्योगीकरण को सुदृढ आधार कृषि ने ही प्रदान किया है। इस प्रकार विकसित देशो का अनुभव इस बात का प्रमाण है कि औद्योगिक विकास के लिए कृषि का विकास आवश्यक है।

युगो पी के अनुसार – कृषि आय में वृद्धि आर्थिक विकास की कुंजी है और यदि कोई देश सर्वप्रथम उसे प्राप्त करने में असफल रहता है तो समस्त विकास प्रकियां अवरूद्व हो सकती है।

भारतीय कृषि की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

भारत देश में कृषि का इतिहास लगभग 9 हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। बहुत पहले से ही वृक्ष लगाना फसले उगाना एवं पशुपालना आरंभ हो गया था। भारत में पाषाण युग में कृषि का कितना और किस प्रकार विकास हुआ था इसकी संप्रति कोई जानकारी नहीं है किन्तु सिंधु नदी के काठे के पुरावशेषो के उत्खन्न से इस बात के प्रचुर प्रमाण मिलते है कि आज से लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व कृषि अत्युन्नत अवस्था में थी । वहां से उत्खनन में मिले गेहूं और जौ के नमूनो से उस प्रदेश में उन दिनो इनके बोये जाने का प्रमाण मिलता है। कपास जिसके लिए सिंध की आज भी ख्याति है उन दिनो भी प्रचुर मात्रा में

www.ignited.in

पैदा होता था । भारत के निवासी आर्य कृषि कार्य से पूर्णतः परिचित थे। ऋगवेद और अर्थर्ववेद में कृषि संबंधी अनेक ऋचाए है जिनमें कृषि संबंधी उपकरणो का उल्लेख है तथा कृषि विद्या का परिचय है। अर्थर्ववेद से ज्ञात होता है कि जो धान दाल और तिल तत्कालीन मुख्य शस्य थे। अर्थर्ववेद में खाद का भी संकेत मिलता है। जिससे प्रकट होता है कि अधिक अन्न पैदा करने के लिए लोग खाद का भी उपयोग करते थे। भारत में ऋगवेदकाल से ही कृषि पारिवारिक उद्योग रहा है और बहुत कुछ आज भी उसका रूप है। लोगो को कृषि सबंधी जो अनुभव होते रहे है उन्हे वे अपने बच्चो को बताते रहे है और उनके अनुभव लोगो प्रचलित होते रहे है। उन अनुभवो ने कालान्तर में लोकोक्तियो और कहावतो का रूप धारण कर लिया है जो विविध भाषा भाषियो के बीच किसी न किसी कृषि पंडित के नाम प्रचलित है और किसानो की जिव्हा पर बने हुए है। हिन्दी भाषा भाषियो के बीच ये धाध और भडरी के नाम से प्रसिद्व है। उनके ये अनुभव आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानो के परिप्रेंक्ष्य में खरे उतरे है।

(इंटरनेट विकीपिडीया)

हरितकंति का आगमन :—

भारत में फोर्ड फाउण्डेशन के विशेषज्ञ दल के प्रतिवेदन के आधार पर अप्रेल 1959 में हरितक्रांति की नीव रखी गई । भारत सरकार ने 1960 में देश के सात जिलो यथा – साहबाद बिहार प,गोदावरी आन्ध्रप्रदेश तंजापुर तमिलनाडु लुधियाना पंजाब रामपुर म0प्र0 अलीगढ (उ.प्र.) पाली (राज.) मे गहन कृषि जिला कार्यक्रम लागू किया। अक्टूम्बर 1965 मे गहन कृषि जिला कार्यक्रम को देश के 114 जिलों तक व्यापक कर दिया गया।

भारत मे हरित क्रांति की शुरूआत का श्रेय प्रोफेसर नार्मन बोरलोग को जाता है। भारत सरकार ने 1966 मे अधिक उपज देने वाली किस्म कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसका उद्देश्य कृषि की नवीन व्यूह रचना से कृषि पड़तो के समन्वित उपयोग से वैज्ञानिक कृषि द्वारा कम समय मे अधिक कृषिगत उत्पादन करना तथा कृषि उत्पादों की मांग व पूर्ति के अंतराल को पाटना था।

नार्मन बोरलॉग को भारत का अन्नदाता भी कहा जाता है और दुनिया इन्हे प्यार से प्रो.व्हीट कहती है। नार्मन बोरलॉग की हरित क्रांति क्या है ? इसकी शुरूआत उन्होने क्यो की ? हमारी कृषि व्यवस्था पर इसका क्या और कितना प्रभाव पडा ? आज विश्व मे हरित क्रांति की स्थिति क्या है ? आदि प्रश्न विचारणीय हो गये है।

" डॉ. बोरलॉग को कृषि और खाद्य उत्पादन मे महत्वपूर्ण योगदान और भूखी दुनिया को रोटी और शांति के लिए 1970 मे नोबल विश्व शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

(विज्ञान प्रगति मार्च 2010)

कृषि में यंत्रीकरण को बढावा :—

नवीन कृषि व्यूहरचना के अन्तर्गत कृषि में यंत्रीकरण को बढावा दिया गया। कृषि में यंत्रीकरण के लिए सभी राज्यो में कृषि उद्योग निगम स्थापित किये गये है। कृषि उद्योग निगम किराया क्रय पद्वति के आधार पर किसानो को कृषि यंत्र उपलब्ध कराते है। वर्ष 1991–92 में ट्रेक्टरो का उत्पादन 1.52 लाख था जो बढकर 1994–95 में 1.64 लाख तथा 1995–96 में 1.91 लाख हो गया।

इसी प्रकार पावर टिलर का उत्पादन 1991–92 में 7580 था जो बढकर 1994–95 में 8334 तथा 1995–96 में बढकर 10239 हो गया। इस प्रकार हरित क्रांति के कारण ट्रेक्टरो और पावर टिलरो के उत्पादन और बिक्री में भी वृद्वि हुई जो कृषि क्षेत्र में बढते मशीनीकरण को प्रदर्शित करता है।

उपर्युक्त तथ्यो के आधार पर हम यह कह सकते है कि प्रांरभ से वर्तमान तक भारतीय कृषि विभिन्न पायदानो से गुजरती गई और आज परम्परागत खेती जो कि हल बैल और परम्परागत कृषि औजारे से की जाती थी वह अब आधुनिक कृषि यंत्रो से की जा रही है।

आधुनिकीकरण की चुनौतियां :—

गैर कृषि कार्यो के लिए उपजाऊ कृषि भूमि का बढता अधिग्रहणः—

❖ औद्योगिक विकास के मार्ग पर अग्रसर भारत देश में बडे बडे उद्योगो के निमार्ण में गांव कस्बे और शहरो में आवासीय क्षेत्र के विस्तार में बडें बांधो के निमार्ण खनन और रेलो तथा सडको के विस्तार इत्यादि में कृषि योग्य भूमि के बढते जा रहे अधिग्रहण के कारण एक ओर कृषि योगय भूमि तेजी से घटती जा रही है तो दूसरी ओर बढती जनसंख्यां के लिए खाद्यान्नो की मांग भी बढती जा रही है एक अनुमान है कि सन 2030 तक खाद्यान्नो की मांग 28 करोड टन तक हो जायेगी। घटती जा रही कृषि योग्य भूमि से भविष्य में खाद्यान्नो की आपूर्ति कैसे हो ? यह स्थिति हमारे लिए बडी चुनौती होंगी।

❖ लधु एवं सीमांत कृषको की प्रधानता :—

भारत लधुं एवं सीमांत कृषको का देश हैं। यहां 1960–61 में लगभग 62 प्रतिशत लधु एवं सीमांत कृषक थें । कृषि संगणना 2000–01 में यह देखा गया कि 120 मिलियन कृषक परिवारो में से 98 मिलियन लधु और सीमांत जोत वाले कृषक थे (लगभग 82 प्रतिशत) 2002–03 में 81 प्रतिशत तथा 2011 में लधु एवं सीमांत कृषक बढकर 83 प्रतिशत हो गये। देश में सीमान्त कृषको की जोत का आकार भी सिर्फ 0:24 हेक्टेयर है ।

जोत का औसत आकार (हेक्टेयर में)

1970–71	2.28
1976–77	2.00
1980–81	1.84
1985–86	1.69
1990–91	1.55
1995–96	1.41
2000–01	1.33
2005–06	1.23
2010–11	1.16

(स्त्रोत – कृषि संगणना 2010–11)

उपरोक्त स्थिति में यंत्रीकरण के माध्यम से गहन खेती करना कैसे संभव हो पायेगा ?

ग्लोबल वार्मिग :–

हम सभी जानते है कि जीवाश्म ईधन के बढते उपयोग द्रुतगति से कटते जा रहे जंगल शहरीकरण इत्यादि के कारण वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसो का उत्सर्जन बढ रहा है। इन गैसो में मुख्य रूप से कार्बन डाइआक्साइड गैस को अधिक दोषी माना जा रहा है क्योकि ग्रीन हाउस गैसो में सर्वाधिक मात्रा इसी की है। धरती का औसत तापमान बढने के कई दुष्परिणाम हमारे सामने आना प्रारंभ हो गये है। नेशनल इंस्टिटयूट ऑफ ओशिनोग्राफी के वैज्ञानिको का मानना है कि सबसे बडी समस्या समुद्र के पानी में अम्लता है। इस बढती अम्लता के कारण शंख या कवच वाले जीवो की संख्यां धट रही है।

महासागरीय संचरण से पुरे विश्व की जलवायु निर्धारित होती है। महासागर कार्बन का सबसे बडा भंडार ग्रह है क्योकि ये इसे काफी मात्रा में सोखते है। जब समुद्र का तापमान बढ़ेगा तो ध्रुवो की बर्फ पिधलेगी ग्लेशियर पिधलेंगे और समुद्र का स्तर बढेगा । समुद्र का स्तर बढने से तटीय क्षत्रो का दायरा सिमटता जाएगा फलस्वरूप किनारे पर रहने वाले लोग अंदर की ओर पलायन करेंगे । समुद्री पानी से बडे इलाके की उपजाउ भूमि भी प्रभावित होगी जिससे पहले मौजूद खाद्यान्न संकट में और इजाफा होगा। जलवायु परिवर्तन के रूप में गर्मी के मौसम का जल्द आना और लम्बे समय तक रहना हमारे सामने है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपनी नेट वर्क परियोजनाओ के अध्ययनो के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार की है । इस रिपोर्ट मे वैश्विक स्तर पर हो रहे जलवायु`परिवर्तन का प्रभाव देश की कृषि पर होगा ? इसकी समीक्षा की है :–

करीब 15 संस्थाओ के साझा प्रयासो से यह सामने आया है कि अगर नई तकनीको का लाभ नहीं लिया गया तो सिर्फ 1 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान बढने पर गेहूं के उत्पादन में 60 लाख टन की कमी आने की आशंका जाहिर की है।

आई सी ए आर के वैज्ञानिक डॉ पी के अग्रवाल का कहना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण गेहूं के उत्पादन में 39 लाख टन की कमी अगले 10 वर्षो में देखी जा सकती है।

कृषि वैज्ञानिको के द्वारा किये गये अध्ययनो में यह सामने आया है कि खरीफ के मौसम में होने वाली धान पर जलवायु परिवर्तन का अधिक प्रभाव पडेगा । धान के उत्पादन में 2020 तक 6.7 प्रतिशत तथा 2050 तक 15.1 प्रतिशत तक कमी आयेगी और इस सदी के अंत तक धान का उत्पादन 28 प्रतिशत तक गिर जाएगा । यदि औसत तापमान में 1 से 4 डिग्री सेल्सियस का इजाफा हुआ तो आलू का 5 से 40 प्रतिशत और सोयाबीन का 11 से 36 प्रतिशत तक उत्पादन धट जायेगा ।

जलवायु परिवर्तन के कारण तात्कालिक प्रभाव जो पडा है वह हमारे सामने दूध के उत्पादन में कमी के रूप में है । जलवायु परिवर्तन के कारण वर्तमान में भारत में 18 लाख टन दूध का उत्पादन घट गया है। इसका प्रमुख कारण संकर नसलो का जलवायु परिवर्तन के साथ तालमेल बैढाने विफल रहना है। वैज्ञानिको का दावा है कि सन 2050 तक 1 करोड 50 लाख टन दूध उत्पादन ग्लोबल वार्मिंग की भेट चढ जाएगा ।

उपरोक्त तथ्यों से यह बात स्पष्ट होती है कि ग्लोबल वार्मिग वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे न केवल चिन्तनीय मुद्दा है बल्कि कृषि विकास के मार्ग मे एक बडी चुनौती

भी है। अतः ग्लोबल वार्मिग को कैसे नियंत्रित किया जाये ? विचारनीय है।

(स्त्रोत– विज्ञान प्रगति, हिन्दी मासिक पत्रिका, मार्च 2010 पृ.क्र. 49

कृषि पर जनसंख्यां का बढता दबाव :–

हमारे देश की तेजी से बढती जा रही जनसंख्यां तथा गैर कृषि कार्यो के धीमे विकास के कारण कृषि क्षंत्र में आज भी आवश्यकता से अधिक लोग लगे हुए है। जनसंख्यां के इस बढते दबाव के कारण एक ओर कृषि जोत का आकार छोटा होता जा रहा है वही दूसरी ओर प्रति कृषक बोई गयी भूमि का क्षेत्रफल धटता जा रहा है। परिणामस्वरूप बेरोजगारी ,कृषको की बदहाल आर्थिक स्थिति , कृषको मे ऋणग्रस्तता और उनका निम्न जीवन स्तर एक समस्या के रूप में हमारे सामने है। उपर्युक्त परिस्थितियो का कृषि उत्पादन और उत्पादकता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पढना स्वाभाविक है।

वर्तमान में हमारे देश की आबादी 121 करोड है जिसके 1930 तक बढकर 150 करोड तक हो जाने की संभावना है । उपरोक्त स्थितियो में इतनी बडी जनसंख्यां के लिए खाद्यान्न की आपूर्ति कैसे होगी ?

हरित क्रांति के दुष्प्रभाव :–

इसे दुर्भाग्य ही कहां जायेगा कि हरित क्रांति से पूर्व जो किसान फसलो की कम उपज होने पर भी खुशहाल थे वे अब अधिक उपज मिलने पर भी गरीबी की जंजीरो में जकडते जा रहे है । आर्थिक विषमता, ऋणग्रस्तता, कृषि में बढती लागते और आर्थिक तंगी से हलाकान किसानो में बढती जा रही आत्महत्याओ के रूप में हमें आज हरितक्रांति की कीमत चुकानी पड रही है। हरित क्रांति ने हमारे समक्ष कृषक और कृषि का जो खतरनाक परिदृश्य हमारे सामने प्रस्तुत किया है वह चिन्तनीय है।

- **हमारी उपजाऊ भूमि नष्ट होती जा रही है**

हमारे देश में खाद्यान्न की उपज बढाने के लिए पिछले कई दशको से अधिकाधिक रासायनिक उर्वरको का प्रयोग किया जा रहा है। आकडे बताते है कि सन 1950–51 में 0.07 मिलियन टन रासायनिक उर्वरको का उपयोग किया गया जबकि सन 2000–01 में इनकी खपत बढकर 16.71 मिलियन टन हो गई जो यह प्रदर्शित करता है कि रासायनिक उर्वरको का प्रयोग 1 किलो ग्राम प्रति हैक्टेयर से बढकर 96 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गया है। अनेक वैज्ञानिको द्वारा विभिन्न स्थानो पर किये गये लम्बे शोध कार्यो से यह सिद्ध हुआ है कि रासायनिक उर्वरको का लगातार प्रयोग मृदा की उर्वरा शक्ति के हास के साथ ही फसल उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। रसायनो के अनियमित एवं अत्यधिक प्रयोग से किसान की आर्थिक स्थिति के साथ साथ पर्यावरण को भी नुकसान पहंचाता

है। कवक नाशक व कीटनाशक जो कि पादप रोगो की रोकथाम के लिए प्रयोग किये जाते है मृदा पारिस्थितिकी के साथ साथ पानी के स्त्रोतो तथा अन्य सभी जीव जन्तुओ के स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करते है। अतः यह प्रमाणित हो जाता है कि अत्यधिक रासायनिक उर्वरको एवं जहरीले कीटनाशको के प्रयोग से हमारी कृषि भूमि जहरीली हो गई है ।

आजादी के वर्ष 1947 तक भूमि में कार्बनिक पदार्थो की मात्रा 5 प्रतिशत सें अधिक पायी जाती थी जो अब धटकर 02 प्रतिशत से भी कम हो गई है। भूमि में उसरता एवं क्षारियता का स्तर बढने से भूमिया बंजर हो रही है। भूमि के लाभदायक केचुए और सुक्ष्म जीव विलुप्त हो गये है। आज स्थिति यह है कि हरितक्रांति से पूर्व जो भूमिया उपजाउ एवं अधिक उत्पादक थी। वे बंजर हो गई है।

- **कृषि उत्पादो की गुणवत्ता में गिरावट आती जा रही है।**
- **जैव विविधता का विनाश होता जा रहा है।**
- **भूमिगत जल स्तर में निरन्तर गिरावट आ रही है।**
- **भूमि की जलग्रहण क्षमता कम होती जा रही है।**

आधुनिक कृषि प्रणाली लधु एवं सीमान्त कृषको जिनके पास सीमित संधान है के लिए अपनाने योग्य नहीं है क्योकि यह मंहगी है। कृषि में किये जा रहे आधुनिकीकरण ने आज हमारे समंक्ष कुछ निम्न यक्ष प्रश्न खडे कर दिये है :–

- **कृषि को लाभदायक व्यवसाय में कैसें परिणित करे ?**
- **भूमि की उर्वरा शक्ति को कैसे बरकरार रखे?**
- **जैव विविधता और पर्यावरण का संरक्षण कैसे हो**
- **अनाज फल व सब्जियो को विषमुक्त कैसे करे?**

इन प्रश्नो का समाधान हमें अतिशिध्र खोजना ही पडेगाा अन्यथा वह दिन दूर नहीं है जब हरियाली का यह बसंत रेगिस्तान में तबदील जायेगा । सम्पूर्ण मानव समुदाय के लिए यह स्थिति खतरे की धंटी होगी।

जैविक खेती एक विकल्प के रूप में :–

कृषि क्षेत्र में आधुनिकीकरण की शुरूआत सें लेकर वर्तमान तक खेती में रासायनिक उर्वरको की मांग में दिनप्रतिदिन वृद्दि होती जा रही है । इनकी कीमते भी निरन्तर बढती जा रही है। यही कारण है, कि रासायनिक उर्वरको की मांग और आपुर्ति के बीच अन्तर भी बढता जा रहा है । रासायनिक उर्वरको पर दी जा रही सब्सिडी में भी कटौती की जा रही है ऐसी स्थिति में आर्थिक दृष्टि से कमजोर देश के बहुसंख्यंक लधु एवं सीमांत कृषको के लिए एक उपयुक्त और सार्थक संसाधन के रूप में **जैविक कृषि** ही एक मात्र **विकल्प** हो सकता है। अब वह समय आ गया है जब हमें रासायनिक खेती के स्थान पर टिकाउ खेती की अवधारणा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। किसानो के पास जो भी संसाधन उपलब्ध है उनका सदुपयोग करके ही खेती करनी होगी ताकि कृषि लागतो में कमी लाकर खेती को लाभदायक बनाया जा सके और किसानो को भी स्वावलंबी बनाया जा सके ।

इतना ही नही रासायनिक खादो से पैदा हुई विषाक्तता द्वारा मानव शरीर को हानि पहुंचाने की वजह से अस्सी के दशक में दुनिया का ध्यान पुनः पारंपरिक खेती की ओर गया । पारंपरिक खेती के इस नये रूपाकार को **जैविक खेती** का नाम दिया गया। खेती की इस पद्वति में गोबर खाद के अलावा जैविक उर्वरको एवं जैविक कीटनाशको का प्रयोग खेतो में किया जाता है ,जो पर्यावरण को क्षति पहुचाये बिना विषरहित शुद्व व पौष्टिक खाद्यान्न उपलब्ध कराता है। यही एक कारण है कि आज विश्व के **160 से भी अधिक देशो में जैविक खेती** को न केवल अपनाया जा रहा है बल्कि कृषि संबंधी नीतिया बनाकर कृषको के बीच इसे लोकप्रिय बनाया जा रहा है यहॉ तक की किसानो को **जागरूक कर जैविक खेती को अपनाने के लिए प्रेरित** भी किया जा रहा है ।

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैविक खेती के प्रति बढती किसानो की रूचि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैविक उत्पादो की बढती मांग और हमारे देश में **जैविक खेती के बढते रकबे** को देखते हुए , देश के बहूसंख्यक लधु और सीमान्त कृषको के लिए खेती को लाभप्रद बनाने तथा **पर्यावरण एवं भूमि संरक्षण** की दृष्टि से जैविक खेती को अपनाना एक सार्थक पहल सिद्व होगी ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

एस नारायण – भारत में जैव खेती संबंधित समस्या और बाधाए –2005

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक आर्थिक विश्लेषण और अनुसंधान विभाग बांद्रा पूर्व मुम्बई 400051

हरिभजन एवं सुभाचन्द्र – जैविक खेती संस्करण 2008

निदेशक राष्ट्रीय जैविक खेती केन्द्र 204 बी खण्ड सीजीओ काम्पलेक्स –2

कमला नेहरू नगर गाजियाबाद 20100

कृषक भारती (त्रैमासिक) भारतीय पब्लिकेशन सी–5 बलराम नगर गोला का मंदिर ग्वालियर इफको कृभको नैफेड द्वारा प्रकाशित

विज्ञान प्रगति मार्च 2010 – वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुससंधान परिषद का हिन्दी मासिक

धर्मसिंह – प्रायोगिक केचुआखाद संदर्शिका 2004 – एग्रो बायोस (इंडिया)चौपासनी रोड जोधपुर